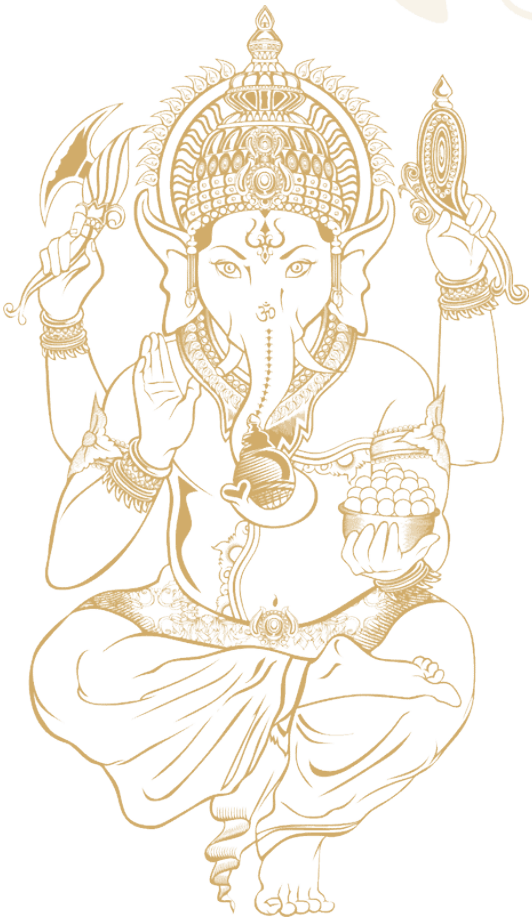

Anubhav Gunjan

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120607901

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120607901 Date: 18/12/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/10/1992	जन्म तिथि	15/07/1995
बुधवार	दिन	शनिवार
घंटे 12:00:00	जन्म समय	11:41:00 घंटे
घटी 14:06:07	जन्म समय(घटी)	15:20:18 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Jhansi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	25:27:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	78:34:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:15:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:21:33	सूर्योदय	05:34:10
17:52:23	सूर्यास्त	19:08:46
23:45:38	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:51
धनु	लग्न	कन्या
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	बुध
मेष	राशि	कुम्भ
मंगल	राशि-स्वामी	शनि
कृतिका	नक्षत्र	शतभिषा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	राहु
1	चरण	1
सिद्धि	योग	आयुष्मान
वणिज	करण	बव
अ-अश्विनी	जन्म नामाक्षर	गो-गौतमी
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
चतुष्पाद	वश्य	मानव
मेष	योनि	अश्व
राक्षस	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
गरुड़	वर्ग	मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 5वर्ष 11मा 18दि		10:00:34	धनु	लग्न	कन्या	18:47:20	राहु 17वर्ष 4मा 15दि	
राहु		27:24:16	कन्या	सूर्य	मिथु	28:31:01	गुरु	
03/10/2015		26:44:28	मेष	चंद्र	कुंभ	07:07:42	29/11/2012	
02/10/2033		22:31:39	मिथु	मंगल	कन्या	02:37:26	29/11/2028	
राहु	15/06/2018	16:20:08	तुला	बुध	मिथु	14:16:41	गुरु	17/01/2015
गुरु	07/11/2020	07:01:12	कन्या	गुरु व	वृश्चि	12:15:03	शनि	30/07/2017
शनि	14/09/2023	29:35:04	तुला	शुक्र	मिथु	18:25:20	बुध	05/11/2019
बुध	03/04/2026	18:03:44	मक व	शनि व	मीन	00:53:19	केतु	11/10/2020
केतु	21/04/2027	29:30:17	वृश्चि व	राहु व	तुला	08:02:05	शुक्र	12/06/2023
शुक्र	21/04/2030	29:30:17	वृष व	केतु व	मेष	08:02:05	सूर्य	30/03/2024
सूर्य	16/03/2031	20:28:35	धनु	हर्ष व	मक	04:57:24	चन्द्र	30/07/2025
चन्द्र	14/09/2032	22:29:46	धनु	नेप व	मक	00:25:04	मंगल	06/07/2026
मंगल	02/10/2033	27:52:42	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	04:10:46	राहु	29/11/2028

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:45:38 चित्रपक्षीय अयनांश 23:47:51

लग्न-चलित

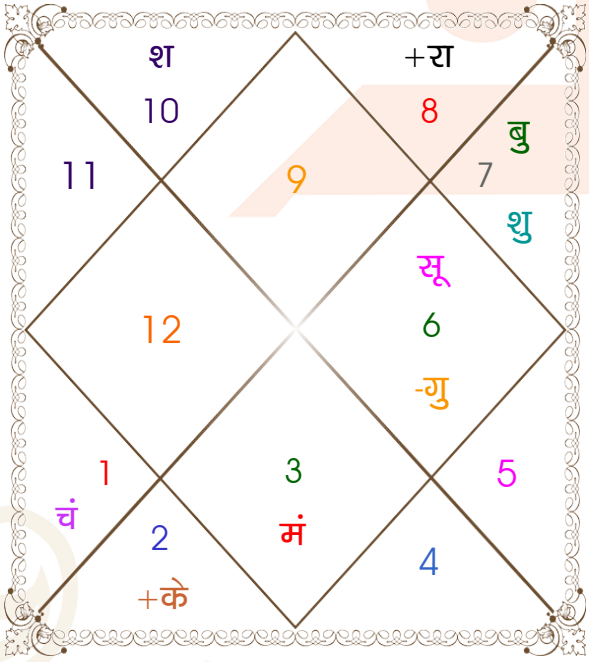

लग्न-चलित

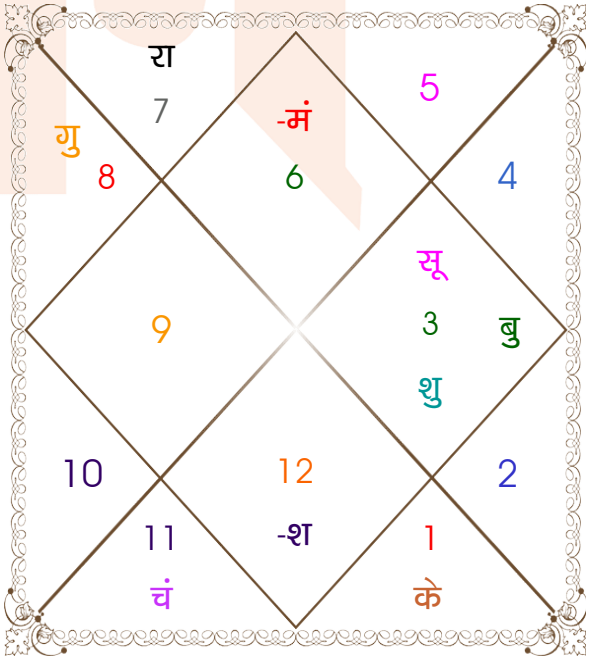

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	अश्व	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

कुल : **28 / 36**

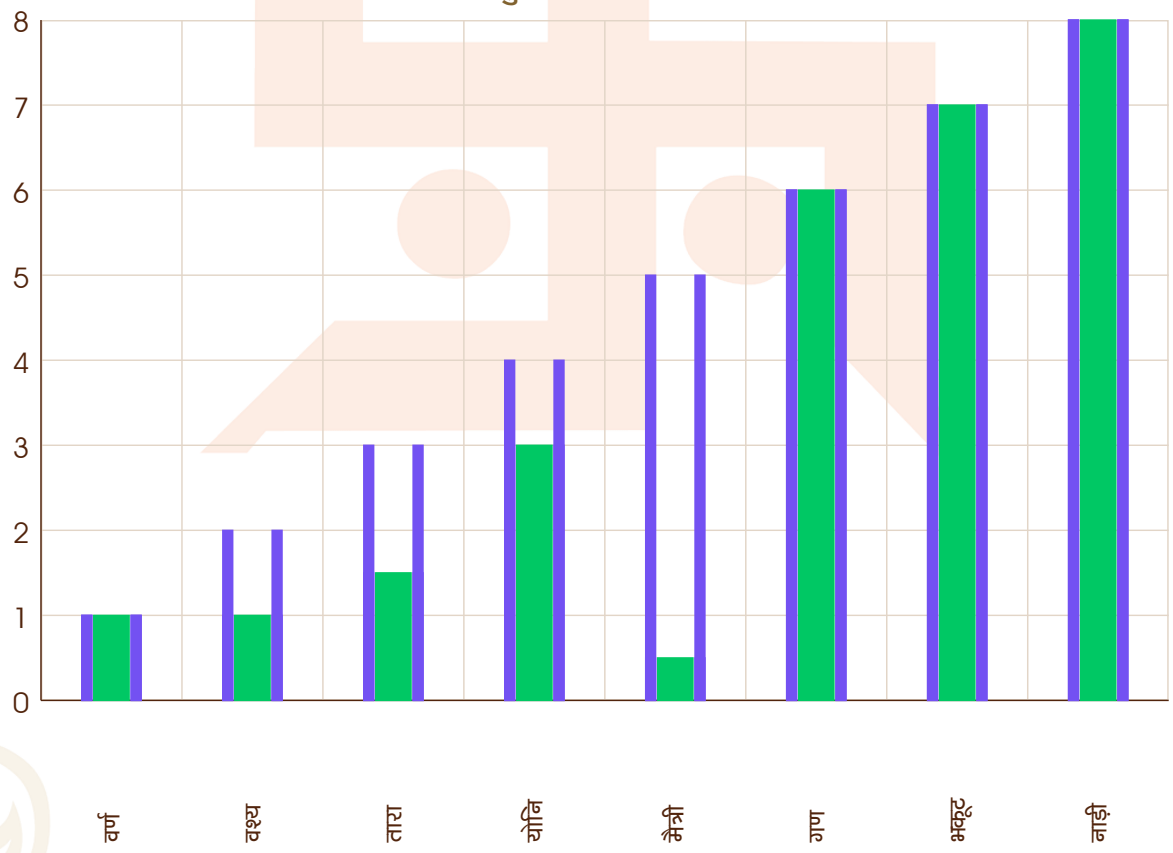

अष्टकूट मिलान

।दनईींअ का वर्ग गरूड़ है तथा ळनदरंद का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ।दनईींअ और ळनदरंद का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

।दनईींअ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

ळनदरंद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि ळनदरंद कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

।दनईींअ तथा ळनदरंद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

।दनईींअ का वर्ण क्षत्रिय तथा ळनदरंद का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से ळनदरंद वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा ।दनईींअ से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

।दनईींअ का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं ळनदरंद का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार ।दनईींअ एवं ळनदरंद एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी ळनदरंद क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

।दनईींअ की तारा वध तथा ळनदरंद की तारा क्षेम है। ।दनईींअ की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ।दनईींअ बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। ।दनईींअ को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु ळनदरंद लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

।दनईींअ की योनि मेष है तथा ळनदरंद की योनि अश्व है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में

सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ।दनईंअ का राशि स्वामी ळनदरंद के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि ळनदरंद का राशि स्वामी ।दनईंअ के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

।दनईंअ का गण राक्षस है तथा ळनदरंद का गण भी राक्षस है। अर्थात ळनदरंद का गण ।दनईंअ के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण ।दनईंअ एवं ळनदरंद दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

।दनईंअ से ळनदरंद की राशि एकादश भाव में स्थित है तथा ळनदरंद से ।दनईंअ की राशि तृतीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण ।दनईंअ परिश्रमी, प्रिय, खुश तथा अपना हर कार्य को उत्साह से संपादित करने वाले होंगे। वह अपने परिवार, पड़ोसियों तथा पूरे समाज की आंखों का तारा होंगे। उनके अपनी पत्नी के साथ उसके संबंध अति मधुर होंगे। दूसरी ओर ळनदरंद हर गुण से परिपूर्ण होगी तथा पति के लिए सदैव सहायक होंगी। वह स्वयं भी व्यावसायिक गतिविधियों में लिप्त रहकर धन कमायेंगी। तथा घर के प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। साथ ही भविष्य के लिए बचत भी करती रहेंगी।

नाड़ी

।दनईंअ की नाड़ी अन्त्य है तथा ळनदरंद की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह समन्वय शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ को संतुलित करता है। ।दनईंअ की अन्त्य नाड़ी तथा ळनदरंद की आद्य नाड़ी होने के कारण उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सत्ता, शक्ति एवं दम्पत्ति के पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी संतान अति भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं शक्ति संपन्न होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

।दनईंअ की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त मेष राशि है जबकि ळनदरंद की वायु तत्व युक्त कुम्भ राशि है। अग्नि एवं वायुतत्व में मित्रता के कारण इनके परस्पर संबधों में मित्रता का आभास रहेगा। साथ ही ळनदरंद ।दनईंअ की शारीरिक आकर्षण की अपेक्षा बुद्धिमता के भाव पर विशेष केंद्रित रहेंगी तथापि यदि ।दनईंअ ळनदरंद को यथोचित सहयोग प्रदान करें तो जीवन में मधुरता के भावों में वृद्धि हो सकती है।

।दनईंअ का राशि स्वामी मंगल ळनदरंद की राशि स्वामी शनि का शत्रु तथा ळनदरंद का राशि स्वामी शनि मंगल का सम है। अतः परस्पर सुख शांति एवं सदभाव के लिए यह स्थिति विशेष अनुकूल नहीं है। ऐसे योग में समस्याओं दोनों तरफ से उत्पन्न होगी। इससे परस्पर ईर्ष्या का भाव विद्यमान रहेगा जिससे दाम्पत्य संबधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी। यदि परस्पर ईर्ष्या के भाव का त्याग किया जाय तो संबधों में स्नेह के भाव की वृद्धि हो सकती है।

।दनईंअ और ळनदरंद की राशियां परस्पर एकादश एवं तृतीय भाव में पड़ती है। यह शास्त्रानुसार शुभ भकूट है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं परस्पर संबधों में ईमानदारी स्नेह एवं आत्मसमर्पण का भाव सदैव विद्यमान रहेगा। साथ ही परस्पर मतभेदों को आप आपस में स्पष्ट चर्चा के द्वारा सुलझाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की सुख शान्ति में वृद्धि होगी।

।दनईंअ का वश्य चतुष्पद तथा ळनदरंद का वश्य मानव है। इनमें नैसर्गिक शत्रुता का भाव होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर एक दूसरे को सन्तुष्ट करने में यत्न से ही सफलता मिलेगी।

।दनईंअ का वर्ण क्षत्रिय तथा ळनदरंद का वर्ण शूद्र है। अतः ।दनईंअ कार्य क्षेत्र में प्रभावी पराक्रमी तथा परिश्रमी होंगे तथा ळनदरंद में कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा चाहे वह किसी भी प्रकार का कार्य हो।

धन

।दनईंअ और ळनदरंद की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः इसका आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सामान्य रूप से धन तथा लाभ प्राप्त करने में दम्पति सफल होंगे। ।दनईंअ एवं ळनदरंद की राशि परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से ।दनईंअ और ळनदरंद की आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता तथा सम्पन्नता में वृद्धि होगी तथामंगल का प्रभाव भी शुभ ही रहेगा। अतः आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

।दनईंअ को लाटरी या सट्टे आदि के द्वारा अचानक धन की प्राप्ति हो सकती

है या किसी अन्य स्रोत से एक साथ प्रचुर मात्रा में लाभ के योग बनेंगे। इस प्रकार ।दनईंअ और ळनदरंद धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

।दनईंअ अन्त्य तथा ळनदरंद आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः विभिन्न नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे जिससे गंभीर शारीरिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी परन्तु मंगल का ।दनईंअ और ळनदरंद दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से ळनदरंद गुप्त या धातु संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही ।दनईंअ को हृदय रोग संबंधी परेशानियां होगी एवं संभोग शक्ति में शिथिलता की अनुभूति करेंगे जिससे दाम्पत्य सुख में न्यूनता की अनुभूति होगी। अतः इन दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए ।दनईंअ और ळनदरंद दोनों को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ।दनईंअ और ळनदरंद का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ।दनईंअ और ळनदरंद के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ळनदरंद के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ळनदरंद को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ळनदरंद को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ।दनईंअ और ळनदरंद सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ।दनईंअ और ळनदरंद का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ळनदरंद के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत ळनदरंद के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं

रहेंगे।

ळनदरंद अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार ळनदरंद के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

।दनईंअ के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को ।दनईंअ अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी ।दनईंअ के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण ।दनईंअ के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।